दस महाविद्याओं में ‘प्रथम महाविद्या भगवती काली’ तन्त्र

आदि शक्ति के मुख्यतः दस भेद हैं- १. काली २. तारा ३.षोडशी ४.भुवनेश्वरी ५. भैरवी ६. छिन्नमस्ता ७. धूमावती ८. बगलामुखी ६. मातंगी १०. कमलालिका । इन दसों महाविद्याओं में भगवती काली का स्थान सर्वप्रथम है।

भगवान काल अथवा ‘शिव’ की पत्नी को काली कहा जाता है। मां काली आदि-मध्यान्त-हीना, जगद्स्वामिनि और जगदम्बा कही जाती हैं। यह भी सर्वविदित है कि यद्यपि वे रूप और आकार से रहित हैं तथापि भक्तों की सुविधा के लिए ही तंत्र शास्त्रों में उनके स्वरूप और गुणों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

यद्यपि मां काली के अनेक उपभेद हैं, तथापि उनमें आठ मुख्य भेद हैं, यथा- चिंतामणि काली, स्पर्शमणि काली, सन्ततिप्रदा काली, सिद्धिदा काली, दक्षिणा काली, कामकला काली, हंस काली, गुह्य काली। इन समस्त भेदों में दक्षिणा काली सबसे मुख्य मानी जाती हैं। भगवती के इस स्वरूप को ही दक्षिणाा अथवा दक्षिणा-कालिका का नाम दिया गया है। वास्तविकता तो यह है कि दक्षिण दिशा के स्वामी यम भी, जो भगवान सूर्य के पुत्र कहे जाते हैं, मां दक्षिणा काली का नाम सुनते ही भयभीत होकर अपना स्थान त्याग देते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि स्वयं यम भी भगवती दक्षिणा कालिका के भक्तों को नरकगामी नहीं बना सकते।

इस सम्बन्ध में ‘मार्कण्डेय पुराण’ में एक चर्चा और भी आयी है कि भगवती अम्बिका के ललाट से उत्पन्न मां काली उपरोक्त मां आद्याकाली से पृथक हैं। उनकी मान्यता मां दुर्गा की

त्रिमूर्ति, अर्थात् महाकाली, महालक्ष्मी, और मां सरस्वती से पृथक है।

मां काली के ध्यान के कई क्रम हैं, यथा- कादि, हादि, क्रोधादि, वागादि, नादि, दादि, और प्रणवादि आदि। इन क्रमों के अनुसार ही साधन-विधि का प्रयोग किया जाता है, जिसे गुरूमुख द्वारा प्राप्त करना ही उत्तम है।

भगवती महाकाली तंत्र विद्या की पराकाष्ठा हैं। संसार में कोई ऐसा कर्म नहीं है, जिसे इन महाशक्ति की कृपा से सम्पादित न किया जा सके। इनका ध्यान इस प्रकार हैः-

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्,
चतुर्भुजां खड्ग-मुण्डवरा-भयकरां शिवाम्।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्,
एवं सञ्चियेत्कालीं श्मशानालय-वासिनीम्।।

भगवती महाकाली का इस प्रकार ध्यान करके यंत्र-पूजन करें। तदोपरान्त भगवती के 22 अक्षरी मंत्र का एक लाख की संख्या में जप करके उसका दशांश हवन, तद्दांश तर्पण, तद्दांश मार्जन एवं तद्दांश ब्राह्मण भोज करने के उपरान्त साधक षट्कर्मों को सम्पन्न करने का अधिकारी हो जाता है। इसके उपरान्त यदि साधक किसी कार्य को सम्पादित करने के लिए मात्र दस हजार मंत्रों का अनुष्ठान भी कर लेता है, तो मां की कृपा से उसके समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। हवन में कनेर के फूलों का प्रयाग करें।

मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्री ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं स्वाहा।

इस मंत्र की विशेषता यह है कि इसका साधक अपने लिए, दूसरों के लिए, लक्ष्मी, प्रसिद्धि प्राप्ति के लिए या दूसरों को प्रदान करने के लिए यदि उक्त मंत्र का अनुष्ठान सम्पन्न करता है तो वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करता है। अभीष्ठ प्राप्ति के लिए साधक को निम्नांकित आश्रयों का सहारा लेना चाहिए।

- ज्ञान प्राप्ति के लिए साधक को किसी सुदंर स्त्री के मदनावास को देखते हुए दश हजार मंत्रों का जप करना चाहिए।
- समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए साधक को नग्न होकर और अपने बालों को खुला रखकर मध्य रात्रि में श्मशान में बैठकर दस हजार जप करना चाहिए।
- राजा, मंत्री अथवा राजनेता बनने के लिए साधक को श्मशान में लाश के उपर बैठकर अपने वीर्य से युक्त एक हजार धतूरे के फूलों से भक्ति पूर्वक जप करते हुए, एक-एक पुष्प देवी को अर्पित करना चाहिए। स्थायी सम्पत्ति प्राप्ति के लिए भी यही प्रयोग किया जाता है।
- कवित्व शक्ति प्राप्त करने के लिए साधक को रजस्राव होते हुए नारी के भग का ध्यान करना चाहिए। ऐसा साधक सुंदर कवित्व करने में पूर्णतः सफल रहता है।
- भगवान शंकर के समान समस्त गुण सम्पन्नता के लिए साधक को चाहिए कि वह शव के हृदय पर आठ अरेवाले महापीठ पर स्थित शिवजी के साथ सम्भोगरत एवं मुस्कान युक्त देवी का ध्यान करते हुए तथा स्वयं भी अपनी शक्ति के साथ सहवास करते हुए एक हजार मंत्र-जप करे।

- समस्त प्राणियों को अपने वशीभूत करने के लिए साधक को कृष्ण पक्ष की अष्टमी को बिल्ली, भेड़ा उंट तथा भैंसे के अस्थि, चर्म तथा रोमयुक्त मांस की बलि देनी चाहिए।

- समृद्धि प्राप्ति के लिए लाल कमल के फूलों से होम करना चाहिए।

- वशीकरण के लिए भी लाल फूलों से हवन करें।

- राज्य प्राप्ति अथवा स्वामित्व एवं अधिकार प्राप्ति के लिए बेल के पत्तों से होम करें।

- पशु-रक्त से तर्पण करने पर साधक को शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

- जो साधक शव पर बैठकर भगवती काली के उक्त मंत्र का एक लाख की संख्या में जप करता है, उसका मंत्र तत्काल सिद्ध हो जाता है।

- जो साधक हविष्यान्न का सेवन करते हुए दिन में भगवती के ध्यान में मग्न होकर जप करता है वह विद्या, लक्ष्मी, यश और पुत्रों से युक्त होकर बहुत दिनों तक सुख प्राप्त करता है।

- शेष फिर...................।

For Any Further Guidance Contact

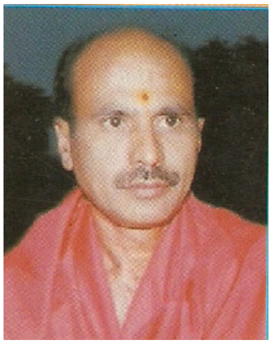

Shri Yogeshwaranand Ji
Contact 9917325788
Email: shaktisadhna@yahoo.com